

# डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 7, धर्म और अमेरिकी क्रांति

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपने व्याख्यान में बोल रहे हैं। यह सत्र 7 है, धर्म और अमेरिकी क्रांति।

यदि इससे मदद मिलती है तो मैं पाठ्यक्रम के पृष्ठ 13 पर हूँ। यह प्रथम महान जागृति है, और हम आज प्रथम महान जागृति पर समाप्त कर रहे हैं। हम व्याख्यान में उस स्थान पर हैं जहाँ हमें होना चाहिए, इसलिए हम इसके लिए आभारी हैं। बस एक अनुस्मारक, हम जोनाथन एडवर्ड्स को बहुत लंबा समय देते हैं क्योंकि वह न केवल प्रथम महान जागृति के लिए बल्कि अमेरिकी ईसाई धर्म में एक महत्वपूर्ण विचारक के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे, इसलिए हम ऐसा करते हैं।

फिर, हमने तीन अन्य महत्वपूर्ण नेताओं के बारे में बात की। हमने फ्रेलिंगहुइसन, टेनेट और जॉर्ज व्हाइटफील्ड के महत्व के बारे में बात की। प्रथम महान जागृति बिना विरोध के नहीं थी।

प्रथम महान जागृति के प्रति प्रतिक्रियाएँ थीं, और इसलिए हमने उन प्रतिक्रियाओं को देखा, उनमें से तीन को विशेष रूप से। अब, हम प्रथम महान जागृति के परिणामों पर हैं। इसका अमेरिकी जीवन और संस्कृति पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा, न केवल धार्मिक रूप से बल्कि सामाजिक रूप से भी, जिसे बहुत से लोग महसूस नहीं करते हैं।

ये दोनों चीजें स्पष्ट रूप से एक दूसरे को पार करती हैं, इसलिए आप हमेशा धार्मिक प्रभाव और सामाजिक प्रभाव के बीच एक महीन अंतर नहीं कर सकते, लेकिन यह एक सामाजिक योगदान है। हम यहीं हैं। मैं यहाँ सूची में नीचे जाऊँगा।

मुझे ठीक से याद नहीं कि हम कहाँ रुके थे, लेकिन मुझे लगता है कि हमने आम आदमी के उत्थान, प्रथम महान जागृति में आम लोगों के महत्व और चर्च जीवन में उन्हें कैसे ऐसे काम करने को मिले जो वे पहले कभी नहीं कर पाए थे, के बारे में बात की थी। वे सार्वजनिक रूप से बोल सकते थे। वे सार्वजनिक रूप से बाइबल पढ़ सकते थे।

वे चर्च जीवन में भाग ले सकते थे। मण्डली हमेशा से ऐसा करती रही है, लेकिन वे चर्च जीवन में भाग ले सकते थे। यह नंबर दो है।

आम लोगों की गतिविधियों पर जोर दिया जाता है। चर्च में नेतृत्व की नई भूमिकाएँ। चर्च में नेतृत्व अब सिर्फ पादरी या मंत्री तक सीमित नहीं है; चर्च में नेतृत्व अब आम लोगों के साथ साझा किया जाता है।

मुझे लगता है कि हमने इसका उल्लेख किया है। मुझे लगता है कि हमने धार्मिक जीवन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लेख किया है; चुनाव की स्वतंत्रता राजनीतिक जीवन में भी उस तरह की व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ओर ले जाती है। चर्च और राज्य का पृथक्करण बहुत महत्वपूर्ण है।

यह बैपटिस्ट, रोमन कैथोलिक और कुछ प्यूरिटन जैसे लोगों के लिए महत्वपूर्ण था। यूरोप में राज्य के उत्पीड़न से पीड़ित लोग अब यहाँ आते हैं, और वे निश्चित रूप से चर्च और राज्य को अलग करना चाहते हैं ताकि राज्य चर्च को नियंत्रित न कर सके। अब, क्या हम नए मानवीय आवेग तक पहुँच गए हैं? क्या यह वह जगह नहीं है जहाँ हमने छोड़ा था? आइए नए मानवीय आवेग के बारे में बात करें, जो अमेरिकी जीवन और संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा। मैथ्यू 22 का अंश था, ईश्वर से प्रेम करो, अपने पड़ोसी से प्रेम करो।

खैर, यह पहली महान जागृति में महत्वपूर्ण हो जाता है। ईश्वर से प्रेम करो, अपने पड़ोसी से प्रेम करो। अब, तुम्हारा पड़ोसी कौन है? खैर, जब जॉन वेस्ले से यह सवाल पूछा गया कि तुम्हारा पड़ोसी कौन है, तो उन्होंने कहा, तुम्हारे बीच सबसे गरीब तुम्हारा पड़ोसी है।

आप में से जो सबसे ज़्यादा असहाय है, वह आपका पड़ोसी है। तो, यह मानवीय आवेग, मैं आपको इसका सिर्फ़ एक उदाहरण देता हूँ, और फिर हम इसे अमेरिकी सांस्कृतिक जीवन में द्वितीय महान जागृति और 19वीं सदी में आए पुनरुत्थान के साथ बढ़ते और विकसित होते देखेंगे। इसका एक उदाहरण व्हाइटफील्ड द्वारा जॉर्जिया में एक अनाथालय का निर्माण था।

जॉर्जिया में एक अनाथालय की ज़रूरत थी। यह कौन करेगा? इन अनाथ बच्चों की देखभाल कौन करेगा? व्हाइटफील्ड ने फैसला किया कि वह उनकी देखभाल करेगा, और उसने एक अनाथालय बनाया। अनाथालय का एक लंबा और बहुत ही दिलचस्प इतिहास था।

हमारे पास अब इन सबके लिए समय नहीं है, लेकिन यह इस प्रथम महान जागृति के मानवीय आवेग को दर्शाता है और जॉर्ज व्हाइटफील्ड अनाथालय का निर्माण करना चाहते थे और यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि बच्चों की देखभाल की जाए। इसलिए, हम अपने साथ बिताए समय में इसे बहुत देखेंगे। सभा के नए रूप बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हैं, सभा के ये नए रूप।

अब, विधानसभा के नए स्वरूप में दो विशेषताएं हैं जिन्हें हम राजनीतिक रूप से भी देखेंगे। पहली विशेषता विधानसभा का सामाजिक संदर्भ है। हम पहले ही इसका उल्लेख कर चुके हैं।

सभा का सामाजिक संदर्भ किसी चर्च, इमारत या स्थान तक सीमित नहीं होगा, बल्कि यह खुले आसमान के नीचे होगा। और यह खुली हवा में होगा जहाँ हर कोई भाग ले सकता है। मेरा मतलब है, इसमें भाग लेने के लिए आपको चर्च का वोटिंग सदस्य होने की ज़रूरत नहीं है।

इसलिए, सभा के नए रूपों में एक सामाजिक संदर्भ शामिल था जो हमने पहले जो कुछ भी देखा है उससे काफी अलग था। यह अब नया है। यह अलग है।

और फिर इसके बारे में दूसरी बात यह है कि सामाजिक संदर्भ में अधिकार की आलोचना करने की क्षमता है। ऐसा थोड़ा-बहुत होता है, शायद प्रथम महान जागृति में भी, लेकिन प्रथम महान जागृति के बाद यह निश्चित रूप से राजनीतिक रूप से होता है। लोगों को लगता है कि नेतृत्व के अधिकार की आलोचना की जा सकती है, और वे इसे खुले तौर पर और सार्वजनिक रूप से कर सकते हैं।

तो, सभा के ये नए रूप वास्तव में यहाँ प्रथम महान जागृति में कुछ अवसर खोलते हैं जिन्हें हम आगे ले जाने जा रहे हैं। और फिर लोगों की संप्रभुता। लोगों की संप्रभुता अब राजनीतिक कार्यालय के लिए महत्वपूर्ण हो जाती है।

तो, अब तक हमने जो देखा है, उससे यह संगठन का एक नया रूप है। अतीत में नेतृत्व केवल अपने संबंधों या केवल अपने धन, प्रभाव और शक्ति के आधार पर ही उठाया जाता था। खैर, लोगों की संप्रभुता महत्वपूर्ण हो गई है।

तो, यह लोग सार्वजनिक रूप से विभिन्न चीजों के बारे में बोल रहे हैं। यहाँ एक उद्घरण है जो इस सबका सारांश प्रस्तुत करता है। मुझे यह उद्घरण बहुत पसंद है क्योंकि यह बहुत अच्छी तरह से कहा गया है, लेकिन इसे एक सामाजिक घटना के रूप में देखें।

तो, चलिए इसे एक सामाजिक घटना के रूप में सोचते हैं। प्रथम महान जागृति अमेरिकी क्रांति के पहले चरण से कम कुछ नहीं दर्शाती है। यह एक बहुत मजबूत बयान है कि यह अमेरिकी क्रांति का पहला चरण है।

क्या अमेरिकी क्रांति तब होती अगर अमेरिका में इतनी मजबूत पहली महान जागृति नहीं होती? खैर, हम नहीं जानते क्योंकि हम जानते हैं कि इतिहास कहाँ गया, लेकिन यह एक अच्छा सवाल है और अमेरिकी क्रांति के पहले चरण के रूप में इसे संक्षेप में प्रस्तुत करने का एक अच्छा तरीका है। तो, यहाँ बहुत सी चीजें हो रही हैं, और बहुत सारे परिणाम हैं, न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक परिणाम भी। तो, पहली महान जागृति, हम इस पहली महान जागृति पर अपने 15 सप्ताह लगा सकते हैं।

यह अमेरिकी जीवन और संस्कृति में घटित एक बहुत ही चमत्कारी घटना थी, और इसने अमेरिकी जीवन और संस्कृति को आकार देने में भी मदद की। मुझे आश्चर्य है कि क्या जोनाथन एडवर्ड्स, नेतृत्व, प्रथम महान जागृति में क्या चल रहा है, और प्रथम महान जागृति के क्या परिणाम थे, के बारे में कोई प्रश्न या कोई ऐसी बात है जिस पर चर्चा की जानी चाहिए। ये लोग खुद को इंजीलवादी मानेंगे।

यह एक ऐसा शब्द है जो रिफॉर्मेशन में आया था। इवेंजेलिकल शब्द रिफॉर्मेशन में आया था, लगभग एक तरह से, प्रोटेस्टेंटिज्म को रोमन कैथोलिकिज्म से अलग करने के लिए। वेस्ले इस शब्द का इंग्लैंड में बहुत जोरदार तरीके से इस्तेमाल करते हैं।

और इंग्लैंड में जो हो रहा है वह वेस्लेयन रिवाइवल है जो पहली महान जागृति के साथ ही चल रहा है। इसलिए, ये लोग खुद को इंजीलवादी समझेंगे, और यह एक ऐसा शब्द है जिससे वे परिचित होंगे और शायद कभी-कभी खुद के लिए इसका इस्तेमाल भी करते होंगे। अब, यह शब्द वापस आने वाला है। जिस शब्द को हम इंजीलवादी समझते हैं वह दूसरी महान जागृति में फिर से थोड़ा वापस आने वाला है, लेकिन यह वास्तव में 20वीं सदी के मध्य में आने वाला है।

तो, हम कुछ इतिहास देखेंगे, लेकिन हाँ, यह एक ऐसा शब्द होगा जिससे वे परिचित होंगे। अगर कोई जोनाथन एडवर्ड्स से कहता, आप एक इंजीलवादी हैं, तो वह कहेगा, हाँ, मैं एक इंजीलवादी हूँ; यही मेरा विश्वास है, और यह पुनरुत्थान इंग्लैंड में वेस्लेयन पुनरुत्थान की तरह एक इंजीलवादी पुनरुत्थान है। तो हाँ, पहले महान जागरण के बारे में कुछ और भी है; यहाँ क्या हो रहा है?

ठीक है, क्या हम सब इसके लिए तैयार हैं? चलिए आगे बढ़ते हैं। मैं पाठ्यक्रम के पेज 13 पर हूँ। तो अब हम व्याख्यान संख्या पाँच, धर्म और अमेरिकी क्रांति पर आगे बढ़ने जा रहे हैं।

और हम सबसे पहले देववाद पर नज़र डालेंगे, जो एक बहुत ही महत्वपूर्ण आंदोलन है जो हमें धार्मिक और सामाजिक दोनों रूप से प्रभावित करेगा। फिर, हम संस्थापक पिताओं के राजनीतिक और धार्मिक सिद्धांतों को देखेंगे। और फिर, हम अमेरिकी क्रांति के प्रति चर्चों की प्रतिक्रिया देखेंगे, और हम क्रांति के समय चर्च में उपस्थिति के बारे में थोड़ी बात करके समाप्त करेंगे।

तो देववाद से शुरू करते हैं। ठीक है, तो देववाद के मामले में हम कहां हैं? ठीक है, सबसे पहले, सामान्य तौर पर 18वीं सदी को लेते हैं। 18वीं सदी को तर्क के युग या तर्कसंगतता के युग के रूप में जाना जाता था।

मेरा मतलब है, यह 17वीं सदी में शुरू होता है, लेकिन फिर यह 18वीं सदी में आता है। तो यह एक व्यापक परिभाषा है, ज़रूर। लेकिन मुझे लगता है कि यह हमारे लिए मददगार है।

तर्क का युग, तर्कसंगतता का युग। ठीक है, अब मैं 18वीं सदी की तीन खासियतों का ज़िक्र करना चाहता हूँ, तीन चीज़ें जिन्होंने 18वीं सदी के तर्क के युग को आकार देने और बनाने में मदद की। ठीक है, सबसे पहले, निश्चित रूप से तर्क का एक प्रकार का उत्थान है।

हमारे पास आधुनिक दर्शन की शुरुआत है, तर्क का उत्थान, तर्क का महत्व। और तर्क के उस महत्व के साथ, कभी-कभी बाइबल, चर्च, संगठित ईसाई धर्म के बारे में संदेह होता है कि यह अनुचित प्रतीत होता है, ऐसा प्रतीत होता है कि यह उचित, तर्कसंगत के साथ मापा नहीं जा सकता है। ठीक है, तो यह एक बात है, इसके साथ-साथ दर्शन का उदय, कभी-कभी, ऐतिहासिक ईसाई धर्म के बारे में संदेह।

ठीक है, नंबर दो, इस तर्क युग की दूसरी तरह की विशेषता, और वह धर्मशास्त्र करने का एक तरीका है। हम इसे प्राकृतिक धर्मशास्त्र कहते हैं। प्राकृतिक धर्मशास्त्र मूल रूप से एक धर्मशास्त्र है; आप में से अधिकांश लोगों को यह याद होगा जिन्होंने धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम लिया होगा, लेकिन प्राकृतिक धर्मशास्त्र तर्क पर आधारित और प्राकृतिक दुनिया के अवलोकन पर आधारित धर्मशास्त्र है।

इसलिए, 18वीं शताब्दी में प्राकृतिक धर्मशास्त्र वास्तव में बहुत शक्तिशाली तरीके से सामने आया। इसलिए, हम ईश्वर के बारे में जो कुछ जानते हैं और उसकी दुनिया के बारे में जो कुछ

जानते हैं, वह अवलोकन के माध्यम से होता है। और 18वीं शताब्दी में प्राकृतिक धर्मशास्त्र और लोगों ने जो कहा, वह था, दुनिया को देखो। दुनिया में सुंदरता है, व्यवस्था है, और डिजाइन है।

यही हम दुनिया में देख रहे हैं। इसलिए, कोई तो होगा जिसने इसे बनाया होगा। इसलिए प्राकृतिक धर्मशास्त्र बस इसी पर ध्यान दे रहा है।

हालाँकि, वे हमेशा यह नहीं पहचान पाए कि प्राकृतिक धर्मशास्त्र में दो खामियाँ हैं, और वे हमेशा प्राकृतिक धर्मशास्त्र में खामियों को नहीं पहचान पाए। सबसे बड़ी खामी यह है कि यह प्रकट धर्मशास्त्र या शास्त्रों में ईश्वर के प्रकटीकरण या मसीह के व्यक्तित्व में ईश्वर द्वारा स्वयं को प्रकट करने के तरीके को दूर कर देता है। इसलिए, वे वास्तव में इस बात को समझ नहीं पाए। कि धर्मशास्त्र प्रकट है।

रहस्योद्घाटन के बारे में क्या? रहस्योद्घाटन के रूप में धर्मशास्त्र के बारे में क्या? दूसरी बात जो वे वास्तव में समझ नहीं पाए, वह यह है कि यदि आप प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर भरोसा करने जा रहे हैं, यदि आप अपने धर्मशास्त्र का निर्माण सौंदर्य, व्यवस्था, ब्रह्मांड की संरचना के आधार पर करने जा रहे हैं, तो उस धर्मशास्त्र का क्या होगा जब भूकंप, बाढ़, सुनामी और बीमारियाँ आती हैं जो कुछ लाख लोगों को मार देती हैं और इसी तरह की अन्य घटनाएँ? तो फिर आपका प्राकृतिक धर्मशास्त्र कहाँ है? क्या यह उचित है? क्या यह तर्कसंगत है? क्या यह आपको ईश्वर के बारे में एक अच्छा दृष्टिकोण देता है? तो, प्राकृतिक धर्मशास्त्र की अपनी वास्तविक सीमाएँ थीं, और लोग हमेशा उन सीमाओं को पहचान नहीं पाते थे। यदि आप केवल प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर भरोसा करने जा रहे हैं, तो आपको उन सीमाओं को समझना होगा। तो तर्क के युग को आकार देने के मामले में यह दूसरा नंबर है।

तो, नंबर एक है दर्शनशास्त्र। नंबर दो है प्राकृतिक धर्मशास्त्र, और फिर हमारे पास तीसरा है। मूल रूप से, जिन शुरुआती देववादियों के बारे में हम बात करने जा रहे हैं, वे कभी-कभी शास्त्रों का सहारा लेते थे, लेकिन अंततः, उन्होंने शास्त्रों को छोड़ दिया।

बाइबल बाहर है, और हमारी अपनी तर्क क्षमता अंदर है, और यही वह है जो प्राकृतिक धर्मशास्त्र को हमारे तर्क द्वारा आकार देता है। तीसरी बात यह है कि 18वीं शताब्दी में, यूरोप में कई वर्षों तक धार्मिक युद्ध हुए। पिछली कुछ शताब्दियों में यूरोप में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के बीच सभी प्रकार के धार्मिक युद्ध हुए थे, और 18वीं शताब्दी में, एक तरह से, लोग इनसे तंग आ चुके थे।

लोगों ने सोचा, अगर यह ईसाई धर्म है, तो मुझे इससे कोई लेना-देना नहीं है, आप जानते हैं? इसलिए, उन धार्मिक संघर्षों से पीछे हटने का एक तरीका है और कहा जाता है, चलो देखते हैं कि क्या हम एक ऐसा धर्मशास्त्र और नैतिक जीवन विकसित कर सकते हैं जो इस तरह की चीज़ों की अनुमति न दे। इसलिए, लोग पिछली एक या दो शताब्दियों के धार्मिक संघर्षों और युद्धों से तंग आ चुके हैं। लोग जीवन और धर्म के प्रति अधिक उचित दृष्टिकोण चाहते हैं।

तो, तर्क का युग एक तरह की प्रतिक्रिया है जो पहले चल रही थी। ठीक है, अब, क्या होता है कि कभी-कभी आपको, आप जानते हैं, इस कोर्स में, आप देखते हैं, कभी-कभी आपको सही व्यक्ति

सही विचार और सही घटनाओं के साथ मिल जाता है। खैर, ऐसा जॉन लॉक नाम के एक व्यक्ति के साथ हुआ।

जॉन लॉक दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, ईसाई धर्म और अन्य क्षेत्रों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। ठीक है, अब जॉन लॉक की बारी है। उनकी तिथियाँ हैं, और उन्होंने द रीज़नेबलनेस ऑफ़ क्रिश्चियनिटी नामक एक पुस्तक लिखी है। तो, पुस्तक का शीर्षक ही यह बताने वाला है कि वह पुस्तक में क्या कहने जा रहे हैं, द रीज़नेबलनेस ऑफ़ क्रिश्चियनिटी।

ठीक है, तो ईसाई धर्म की तर्कसंगतता में लॉक का आधार यह है कि ईसाई धर्म की बुनियादी सच्चाईयाँ तर्कसंगत हैं। आप उन्हें अपने तर्क से समझ सकते हैं। वे तर्कसंगत हैं और तर्कसंगत रूप से समझी जा सकती हैं। इसलिए, ईसाई धर्म की बुनियादी सच्चाईयाँ सरल, बुनियादी और तर्कसंगत हैं।

और वह इस तरह का मामला बनाने जा रहा है, वह इसके लिए एक मामला बनाने जा रहा है। ठीक है, वह निश्चित रूप से प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर बहुत अधिक निर्भर करता है क्योंकि आंशिक रूप से वह दुनिया की सुंदरता, दुनिया के क्रम, दुनिया की समरूपता और दुनिया के डिजाइन से अपना मामला बनाता है। इसलिए वह आंशिक रूप से उस तरह के प्राकृतिक धर्मशास्त्र के आधार पर अपना मामला बनाने जा रहा है।

लेकिन जहाँ तक उनका सवाल है, ईसाई धर्म मूल रूप से तर्कसंगत है। ठीक है, अब जॉन लॉक जैसा कोई व्यक्ति अभी भी बाइबल का उपयोग कर रहा है। यह एक तरह से इन सवालों का जवाब देता है, लेकिन वह अभी भी बाइबल का उपयोग कर रहा है।

उन्होंने बाइबल को पूरी तरह से खारिज नहीं किया है। लेकिन जॉन लॉक के अनुयायी, जैसे-जैसे आप 18वीं सदी में प्रवेश करेंगे, जो इसी तरह की बातों पर विश्वास करेंगे और विश्वास करेंगे कि ईसाई धर्म उचित और तर्कसंगत है, अंततः बाइबल को खारिज कर देंगे। उन्हें लगता है कि वे ईश्वर और उसके ब्रह्मांड और हमारे जीवन के बारे में जानने के लिए जो कुछ भी जानना चाहते हैं, वह वे अपने तर्क से, बस चारों ओर देखकर सीख सकते हैं।

लेकिन जॉन लॉक इस मामले में बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं कि आखिरकार देववाद के नाम से क्या जाना जाएगा। इसलिए, हम उनका नाम ज़रूर बताना चाहेंगे। ठीक है, तो देववाद नामक एक आंदोलन सामने आया है।

ठीक है, और इसलिए हम अभी भी यहाँ A पर हैं, देववाद। साथ ही देववाद नामक एक आंदोलन भी आया। ठीक है, आइए देववाद को परिभाषित करें।

मुझे लगता है कि हमने शायद इस बारे में पाठ्यक्रम में पहले ही बता दिया है। लेकिन देववाद कोई धर्म नहीं है। देववाद एक तरह का धार्मिक दर्शन है।

देववाद एक तरह का धार्मिक विश्वदृष्टिकोण है जो वास्तव में जॉन लॉक जैसे लोगों के लेखन के माध्यम से इंग्लैंड में शुरू हुआ। यह इंग्लैंड से शुरू होकर अमेरिका में आता है, और फिर उपनिवेशों में भी आता है। तो यह देववाद है।

और आप जानते हैं कि ईश्वर से प्राप्त ईश्वरवाद यहाँ ऊपर है और हम यहाँ नीचे हैं। ईश्वर ने दुनिया को एक घड़ी की तरह घुमाया है, और यह टिक-टिक कर चल रही है। तो अब, बस यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम समझें, ईश्वरवाद का विपरीत ईश्वरवाद है।

तो, आस्तिकता देववाद के विपरीत है। देववाद यहाँ ऊपर भगवान है, और हम यहाँ नीचे हैं। आस्तिकता यहाँ ऊपर भगवान है, लेकिन वह हमारे जीवन के लिए चिंतित है।

वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के रूप में हमारी दुनिया में आया है, और यहाँ ईश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध है। यही ईश्वरवाद है। ठीक है, लेकिन आइए यहाँ देववादियों की ओर वापस चलते हैं।

इसलिए, उन्होंने 17वीं और 18वीं शताब्दी में खुद को आकार देना शुरू किया। ठीक है, मैं उनके द्वारा विकसित की गई कुछ मान्यताओं के बारे में बताता हूँ जो इस बात पर प्रकाश डालेंगी कि देववाद क्या है। ठीक है, नंबर एक, वे एकेश्वरवादी हैं।

वे ईश्वर में विश्वास करते हैं। इसलिए, वे एकेश्वरवादी हैं। वे बुतपरस्त नहीं हैं।

वे बहुत से देवताओं में विश्वास नहीं करते। इसलिए, वे एकेश्वरवादी हैं, लेकिन निश्चित रूप से, वे त्रिदेवों को नकारते हैं। इसलिए, वे मूल रूप से यूनिटेरियन हैं, और यही वह संप्रदाय है जिसमें वे अंततः विकसित होंगे।

ठीक है, तो यह देववादियों की एक मान्यता है, एक ईश्वर में विश्वास। ठीक है, देववादियों को कहना होगा कि दुनिया में पाप है क्योंकि ऐसा न कहने के लिए आपको अपनी आँखें कैसे बंद करनी होंगी? उन्हें कहना होगा कि दुनिया में पाप है, लेकिन वह पाप मूल पाप नहीं है। वह पाप सिर्फ उस स्वतंत्र इच्छा से आता है जिसके तहत हमें ईश्वर को हाँ या ना कहना होता है, लेकिन वे स्वीकार करते हैं कि दुनिया में पाप है।

उन्हें ऐसा करना ही होगा। ठीक है, लेकिन इससे नंबर तीन की बात सामने आती है। हालाँकि, वे जिस बात पर ज़ोर देना चाहते हैं, जिस बात पर देववादी ज़ोर देना चाहते हैं, वह है नैतिकता और आचार-विचार।

क्या अच्छा जीवन जीना संभव है? क्या सद्गुणों का अभ्यास करना संभव है? क्या नैतिक जीवन जीना संभव है? और इसका उत्तर नास्तिकों के पास बिल्कुल हाँ है, और ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके पास ऐसा करने के अवसरों में बाधा डालने वाला कोई मूल पाप नहीं है। आपकी इच्छा की स्वतंत्रता के कारण आपके अपने जीवन में कुछ पाप हो सकते हैं, लेकिन आपके पास ऐसा कोई मूल पाप नहीं है जो आपको ऐसा करने से रोके। इसलिए, वे वास्तव में लोगों को एक सद्गुणी जीवन, एक नैतिक जीवन जीने के लिए कहते हैं, और उन्हें लगता है कि यह उचित है।

देववादियों के लिए चौथा नंबर, वे ऐसा करते हैं। देववादियों, विशेष रूप से शुरुआती देववादियों को उम्मीद थी कि एक जीवन के बाद का जीवन होता है। उन्हें लगता था कि इस जीवन में पुण्य का पूरा पुरस्कार नहीं मिल सकता। एक अच्छे नैतिक जीवन का पूरा पुरस्कार यहाँ नहीं मिल सकता, और इसलिए एक जीवन के बाद का जीवन होता है।

और वे यह भी कहने को तैयार हैं कि परलोक में पुरस्कार और दंड हैं। क्या परलोक में स्वर्ग और नर्क है? खैर, यह थोड़ा अस्पष्ट है, लेकिन परलोक में पुरस्कार और दंड ज़रूर हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। अब, अंततः, याद रखें कि ईश्वरवाद केवल एक धार्मिक दर्शन है।

यह अभी तक एक संप्रदाय नहीं है, लेकिन अंततः, जब यह यूनिटेरियनवाद में विकसित होगा, तो यह सार्वभौमिकता में भी विकसित होगा। इसलिए, देवाद अंततः यूनिटेरियनवाद और फिर सार्वभौमिकता में विकसित होने जा रहा है, जो सिखाता है कि सभी लोग स्वर्ग के पुरस्कारों का आनंद लेंगे, चाहे उनका जीवन पृथ्वी पर कैसा भी हो। हर कोई भगवान के पास जाएगा और उनके साथ रहेगा।

भगवान एक तरह से सब कुछ ठीक कर देंगे। और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि 20वीं सदी में, 20वीं सदी के मध्य में, यूनिटेरियन और यूनिवर्सलिस्ट, जो दो अलग-अलग संप्रदायों के रूप में शुरू हुए थे, 20वीं सदी में अमेरिका में एक हो जाएंगे, जिससे वे यूनिटेरियन-यूनिवर्सलिस्ट संप्रदाय बन जाएंगे।

तो देवाद के ये दो पहलू एक साथ आने वाले हैं। तो ये कुछ ऐसी बातें हैं जो देववादियों ने सिखाईं, कुछ ऐसी बातें जिन पर उन्होंने विश्वास किया। अब, कुछ लेखक हैं, इसलिए, जिन्होंने ऐसा नहीं किया, और याद रखें, हमने प्रश्न के उत्तर में कहा था, प्रारंभिक देवादी बाइबल को बाहर नहीं फेंकना चाहते थे।

वे बाइबल को समझना चाहते थे। वे बाइबल के पाठ का उपयोग करना चाहते थे। इसलिए, मैं यहाँ दो महत्वपूर्ण लेखकों का उल्लेख करना चाहता हूँ।

पहले हैं जॉन टोलैंड। ये दोनों ही ब्रिटिश लेखक हैं, और ये दोनों ही लेखक मूल रूप से ईश्वरवाद का बचाव करने जा रहे हैं। उन्होंने क्रिश्चियनिटी नॉट मिस्टीरियस नामक पुस्तक लिखी है।

और उनकी किताब का सिद्धांत यह है कि बाइबल में ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमारे तर्क से परे हो। बाइबल के पाठ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो तर्क के साथ सामंजस्य से बाहर हो। अब, अगर बाइबल के पाठ में कुछ ऐसी बातें हैं जो तर्क के साथ सामंजस्य से बाहर हैं, तो शायद हमें उन पाठों से छुटकारा पा लेना चाहिए।

लेकिन हम जो चाहते हैं वह ईसाई धर्म है, रहस्य नहीं। हम कोई रहस्य नहीं चाहते। और इसलिए जॉन टॉलैंड ने अपनी किताब लिखी, और फिर उसके बाद उन्होंने एक तरह की किताब लिखी जिसे देवादी बाइबिल के नाम से जाना जाता है, मैथ्यू टिंडल, ईसाई धर्म जो सृष्टि जितना पुराना है।

ईसाई धर्म सृष्टि जितना ही पुराना है। इस पुस्तक में, वह जो करता है वह है रहस्योद्घाटन के उपयोग के बजाय शास्त्र को समझने के लिए तर्क के उपयोग को बनाए रखना, शास्त्र को रहस्योद्घाटन के रूप में समझने के बजाय। इसलिए, शास्त्र हमारे लिए ईश्वर की ओर से कोई रहस्योद्घाटन नहीं है।

धर्मग्रंथ हमारे लिए ईश्वर का कुछ वचन है, लेकिन ईश्वर का वह वचन जिसे हम अपनी बुद्धि से समझ सकते हैं। इसलिए, ईसाई धर्म उतना ही पुराना है जितना सृष्टि। टिडल जैसे किसी व्यक्ति के लिए, जब आप सृष्टि को देखते हैं तो आप क्या देखते हैं? व्यवस्था, सुंदरता और डिजाइन।

खैर, यह ईसाई धर्म के बारे में भी सच है। ईसाई धर्म व्यवस्था, सुंदरता और डिजाइन का धर्म है। और यह तर्कहीन और अनुचित नहीं है।

तो टॉलैंड और टिडल ने अंग्रेजी यूनिटेरियनवाद और अंग्रेजी देववाद पर अपने लेखन के माध्यम से जबरदस्त प्रभाव डाला, लेकिन फिर, निश्चित रूप से, अमेरिकी भी टॉलैंड और टिडल को पढ़ रहे थे। इसलिए, यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हो गया। आइए एक मिनट के लिए ए के साथ रहें, देववाद।

रूढ़िवादी अब देववाद का जवाब देना शुरू करने जा रहे हैं। रूढ़िवादी देववाद को पीछे धकेलना शुरू करने जा रहे हैं, और थोड़ा चिंतित होना कि देववाद इतना लोकप्रिय है, लोगों के दिलों और दिमागों पर इतना कब्जा कर रहा है, एक तरह से लड़ाई जीत रहा है। इसलिए, रूढ़िवादी पीछे धकेलने जा रहे हैं।

मैं तीन तरीकों का उल्लेख करना चाहूँगा, जिनसे रूढ़िवादी पीछे हटते हैं। पहला तरीका, रूढ़िवादी पीछे हटने का पहला तरीका है, कुछ हद तक देववादी संदेशों को स्वीकार करना। देववादियों से कहना है कि आप जो सिखा रहे हैं, हम उससे कुछ हद तक सहमत हैं।

हम इसे स्वीकार करते हैं। दुनिया में एक व्यवस्था, एक सुंदरता और एक डिजाइन है। और हम इसे पुराने नियम में देखते हैं।

हम इसे भजन संहिता के लेखकों में देखते हैं। हम इसे नए नियम में कुछ स्थानों पर देखते हैं। इसलिए, पहला तरीका जिससे वे प्रतिक्रिया करते हैं, वह है ईश्वरवादियों के साथ कुछ सामान्य आधार खोजने की कोशिश करना और यह कहना कि आप जो सिखा रहे हैं, वह सही है।

और केल्विन ने खुद कहा कि ईश्वर को जानने का एक तरीका यह है कि हम अपने आस-पास की दुनिया को देखें। तो यह एक तरीका है जिससे वे प्रतिक्रिया करते हैं, उस तरह के सामान्य आधार को खोजने की कोशिश करते हैं। दूसरा, दूसरा तरीका जिससे वे प्रतिक्रिया करते हैं वह है बाइबल का बचाव करना।

या मुझे कहना चाहिए, शायद पूरे बाइबिल रिकॉर्ड का बचाव करना बेहतर होगा। इसलिए रूढ़िवादी ने यह कहकर जवाब दिया कि बाइबिल रिकॉर्ड केवल दुनिया और भगवान के

डिजाइन की एक उचित समझ नहीं है, बल्कि बाइबिल रिकॉर्ड चमत्कारों और भविष्यवाणियों और परम भगवान के देह बनने, एक तरह से परम रहस्य, भगवान के देह बनने से भरा है। इसलिए हम स्वीकार करते हैं कि शायद देववादी बाइबिल के कुछ पाठ को देखते हैं, लेकिन हम यह कहना चाहते हैं कि बाइबिल के पाठ का एक और हिस्सा है जिसे वे स्वीकार नहीं कर रहे हैं और उन्हें इसे स्वीकार करना चाहिए क्योंकि वह पूरी बाइबिल है।

तो, पूरी बाइबल सिर्फ इस बारे में तर्कसंगत समझ नहीं है कि ईश्वर कौन है। बाइबल, कई बार, चमत्कारों और ईश्वर के काम करने के दूसरे तरीकों से भी भरी हुई है जिन्हें हम हमेशा नहीं समझ पाते, वगैरह। तो यह दूसरा तरीका है जिससे उन्होंने इसका बचाव किया।

तीसरा तरीका वह था जिससे रूढ़िवादी ने इसका बचाव किया। एक व्यक्ति था जिसने ए केस फॉर रीज़न नामक पुस्तक लिखी थी। तीसरा तरीका जिससे रूढ़िवादी ने इसका बचाव किया वह यह था कि ईसाई धर्म विश्वास की खोज करने वाली समझ है।

तो, तीसरा तरीका यह है कि हम इस बात से सहमत हैं कि तर्क बहुत महत्वपूर्ण है। हम इस बात से सहमत हैं कि ईश्वर को समझने और ईश्वर हमसे क्या चाहता है, यह जानने में हमारे दिमाग का इस्तेमाल बहुत महत्वपूर्ण है। तो, तीसरा तरीका रूढ़िवादी तर्क कहता है, हम सहमत हैं, विश्वास समझ की तलाश करता है।

हालाँकि, इस रूढ़िवाद के एक हिस्से ने याद रखने को कहा कि हमारी तर्कसंगतता की सीमाएँ हैं। याद रखें कि हमारी तर्क क्षमता की सीमाएँ हैं। याद रखें कि परमेश्वर जिस तरह से काम करता है, उसमें रहस्य है, और मसीह के रूप में देह में आने वाले परमेश्वर से ज़्यादा रहस्यमय कुछ भी नहीं है, और हम विश्वास के द्वारा उसमें आनन्दित होते हैं।

तो, तर्क के लिए एक मामला, हाँ, आप तर्क के लिए एक मामला बना सकते हैं, लेकिन उस तर्क की सीमाएँ हैं। तो, रूढ़िवाद ने पीछे धकेलना शुरू कर दिया। रूढ़िवाद ने देववादियों को जवाब देना शुरू कर दिया।

इसलिए, यहाँ पर देववादियों और रूढ़िवादियों के बीच कुछ संघर्ष शुरू हो गया है। देववादियों को जवाब देने वाले लोगों में से एक, जोनाथन एडवर्ड्स थे। ठीक है, तो यह ए, देववादी हैं।

क्या इन लोगों के बारे में कोई सवाल है? वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। आप में से कुछ लोग शायद एक पेपर में देववादियों के बारे में लिखना चाहें, लेकिन क्या इन लोगों के बारे में कोई सवाल है? ठीक है, अब हम बी पर चलते हैं और संस्थापक पिताओं के राजनीतिक और धार्मिक सिद्धांत के बारे में बात करते हैं। ठीक है, तो यहाँ हम इस पर आगे बढ़ने वाले हैं।

ठीक है, मुझे अपना काम पसंद है। मुझे गॉर्डन में रहना पसंद है। मुझे अपना काम पसंद है।

और मैं कुछ ऐसी बातें कहने जा रहा हूँ जिनसे आप सभी सहमत नहीं होंगे और शायद आपको लगता है कि ये विधर्मी हैं, और शायद बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज को मुझसे बात करनी चाहिए। कभी-कभी, आप चाहते हैं कि आप गणित को दो की तरह पढ़ाएँ, और दो चार होते हैं, और यह एक

अच्छी बात है। इसलिए, मैं मामला सामने रखूँगा और फिर देखूँगा कि आप इससे सहमत हैं या असहमत।

आप इस पर पीछे हटें। इसे यूँ ही न निगलें। अगर आप इससे सहमत नहीं हैं और अगर आपके पास इससे सहमत न होने का कोई अच्छा कारण है, तो मुझे ज़रूर बताएं।

तो, ठीक है, तो हम इसके साथ ठीक करने जा रहे हैं? हम ठीक करने जा रहे हैं। तो, अपने दिलों को आशीर्वाद दें। ठीक है, संस्थापक पिताओं का राजनीतिक और धार्मिक सिद्धांत।

ठीक है, संस्थापक पिता, तो यहाँ एक तरह से मेरी थीसिस है। ज़्यादातर संस्थापक पिता, सभी नहीं, लेकिन जिन्हें हम संस्थापक पिता कहते हैं, उनमें से ज़्यादातर इंजील ईसाई नहीं थे। वे वे नहीं थे जिन्हें हम इंजील ईसाई कहेंगे।

इस बात का कोई सबूत नहीं है कि वे इंजील ईसाई थे। और मैं संस्थापक मूवर्स एंड शेकर्स के बारे में बात कर रहा हूँ। और मैं इसके उदाहरण के तौर पर बस एक मिनट में थॉमस जेफरसन का इस्तेमाल करूँगा।

ये लोग देववादियों से बहुत प्रभावित थे। और वे देववादी सोच से बहुत प्रभावित थे, धार्मिक सोच और राजनीतिक सोच दोनों से। और इसलिए आप यह नहीं मान सकते कि संस्थापक पिता महान इंजीलवादी, बाइबल-विश्वासी, चर्च जाने वाले ईसाई थे।

दुर्भाग्य से, सबूत इसका समर्थन नहीं करेंगे। ठीक है, तो चलिए थॉमस जेफरसन का उदाहरण लेते हैं। थॉमस जेफरसन खुद एक नास्तिक थे।

उनके जीवन में देववाद का बहुत प्रभाव था। एक निश्चित राजनीतिक सिद्धांत भी उनके जीवन में बहुत प्रभावशाली था, जो देववादी भी था। थॉमस जेफरसन ने, आपको यह दिखाने के लिए कि वह कितने बड़े देववादी थे, जेफरसन बाइबिल लिखी।

मुझे नहीं पता कि आप में से किसी ने कभी जेफरसन बाइबिल देखी है या नहीं, लेकिन अगर आपने जेफरसन बाइबिल देखी है, थॉमस जेफरसन, उन्होंने जो किया, उन्होंने बाइबिल, विशेष रूप से न्यू टेस्टामेंट और विशेष रूप से गॉस्पेल को लिया, और उन्होंने जो किया, उन्होंने बाइबिल से यीशु के चमत्कारों को काट दिया। उन्होंने चमत्कारों को काट दिया क्योंकि उन्हें लगा कि चमत्कार तर्कहीन और अनुचित थे और उनका समर्थन या बचाव नहीं किया जा सकता था। उन्हें यीशु द्वारा कही गई कुछ अच्छी बातें पसंद थीं।

तो, आप पाठ में बीटिट्यूड्स जैसी कुछ चीजें रखते हैं। लेकिन जेफरसन बाइबिल वास्तव में एक बाइबिल है जिसे यीशु को दिखाने के लिए सावधानीपूर्वक संपादित किया गया है। यीशु 18वीं सदी के एक महान विचारक की तरह हैं।

तो, चमत्कारों को हटा दिया गया है। खैर, अगर आप चमत्कारों को हटा दें, तो आपको यहाँ कुछ समस्याएँ होंगी। और अगर आप क्रूस पर मृत्यु और पुनरुत्थान जैसी चीज़ों को हटा दें, तो आपको यहाँ कुछ बुनियादी समस्याएँ मिलेंगी।

लेकिन जेफरसन एक बहुत ही शांत यीशु चाहते थे। वह एक बहुत ही तर्कसंगत 18वीं सदी का यीशु चाहते थे, और यही उन्होंने जेफरसन बाइबिल के साथ किया। इसलिए जेफरसन इसका एक अच्छा उदाहरण हैं, जो खुद एक तरह से पूरी तरह से नास्तिक हैं।

तो, मुझे लगता है, मेरा मतलब है, आप मुझे बताइए कि क्या वह ऐसा नहीं है और मुझे कुछ अच्छे सहायक सबूत दीजिए कि वह ऐसा नहीं है, लेकिन मैं इस बारे में बात करना चाहता हूँ। लेकिन फिर भी, चलिए रूसो और जीन-जैक्स रूसो के महत्व पर चलते हैं। तो, यहाँ रूसो यूरोप में लिख रहे हैं, और वह सामाजिक अनुबंध नामक एक चीज़ लिख रहे हैं।

और आपने निश्चित रूप से, ठीक है, कितने लोगों ने अन्य पाठ्यक्रमों के लिए सामाजिक अनुबंध पढ़ा है? शायद राजनीतिक अध्ययन पाठ्यक्रमों के लिए, यह राजनीतिक अध्ययन पाठ्यक्रम या ऐसी ही चीज़ें होंगी। तो सामाजिक अनुबंध। यदि आपने सामाजिक अनुबंध नहीं पढ़ा है, तो मैं आपको पुस्तक से कुछ बिंदु बताकर आपकी मदद करने जा रहा हूँ।

तो, अगर आपने इसे नहीं पढ़ा है, तो हम सोशल कॉन्ट्रैक्ट के बारे में बात करेंगे। सोशल कॉन्ट्रैक्ट 18वीं सदी में एक बहुत ही प्रभावशाली पाठ था और जेफरसन और अन्य संस्थापक पिताओं पर इसका बहुत प्रभाव था। आप पाएंगे कि यह मूल रूप से एक ईश्वरवादी प्रकार का पाठ है।

यह सिर्फ राजनीतिक ही नहीं है, बल्कि एक तरह से धार्मिक भी है। ठीक है, आज सोमवार की सुबह है; आपको एक ब्रेक की ज़रूरत है। तो, एक ब्रेक लें।

अब, चलिए सोशल कॉन्ट्रैक्ट पर नज़र डालते हैं। आपमें से ज़्यादातर लोगों ने इसे नहीं पढ़ा है, इसलिए मैं सोशल कॉन्ट्रैक्ट से कुछ ऐसी बातें बताने जा रहा हूँ जो हमारे संस्थापक पिताओं के लिए महत्वपूर्ण बन गईं। ठीक है, सबसे पहले, नंबर एक, बहुत महत्वपूर्ण।

सोशल कॉन्ट्रैक्ट में रूसो ने राजाओं के दैवीय अधिकार के किसी भी सिद्धांत को नकार दिया है। इसलिए, वह राजाओं के दैवीय अधिकार के किसी भी सिद्धांत को नकारता है। राजाओं को शासन करने का कोई दैवीय अधिकार नहीं है, क्योंकि वे यहाँ यूरोप में शासन कर रहे हैं, जहाँ वह पुस्तक लिख रहे थे।

वह वास्तव में राजनीतिक नेतृत्व के बारे में एक बहुत ही कट्टरपंथी, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण का प्रस्ताव करते हैं। और राजनीतिक नेतृत्व का वह धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण यह है कि यह लोगों से आता है। इसलिए राजाओं का कोई दैवीय अधिकार नहीं है, लेकिन नेतृत्व लोगों से आता है।

तो यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। तो यह नंबर एक है। ठीक है, नंबर दो, लोगों की सामान्य इच्छा ही है जो कानूनों के माध्यम से लोगों पर शासन करना जारी रखती है।

हमें सरकार के लिए कौन से कानून बनाने चाहिए? खैर, हमें ऐसे कानून बनाने चाहिए जो लोगों की आम इच्छा से आते हों। हम उन कानूनों का पालन नहीं करते जो किसी राजा द्वारा हम पर थोपे जाते हैं। हम सरकार के कानूनों और जीवन के उन कानूनों का पालन करते हैं जो लोगों की इच्छा से तय होते हैं कि लोगों के हित में अच्छे हैं।

तो, यह हम पर थोपा हुआ कुछ नहीं है। हम ही हैं जिन्होंने इसे विकसित किया है। ठीक है, नंबर तीन, सामाजिक अनुबंध, सामाजिक अनुबंध क्या है? सामाजिक अनुबंध के दो पहलू हैं।

यह दो पहलुओं वाले सिक्के की तरह है। ठीक है, सामाजिक अनुबंध यह है कि सबसे पहले, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा की जानी चाहिए। एक तरफ, सिक्के का एक पहलू यह है कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा और सुरक्षा की जानी चाहिए।

दूसरी ओर, हालांकि, एक न्यायपूर्ण सरकार होनी चाहिए जिसे लोगों की आम भलाई का ख्याल रखना चाहिए। तो, एक तरफ हमारे पास व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा है, लेकिन दूसरी तरफ, एक न्यायपूर्ण सरकार है जिसे आम भलाई का ख्याल रखना चाहिए। ठीक है, तो यह नंबर तीन है।

ठीक है, नंबर चार, यह किताब, नंबर चार, मैं बस इतना कहना चाहता हूँ, यह किताब है, यह कहना मुश्किल है, यह किताब यहाँ के राजनीतिक नेताओं की सोच पर कितनी प्रभावशाली थी, क्योंकि यहाँ अमेरिका में क्रांति की शुरुआत हो रही थी। यह किताब इस बात पर बहुत प्रभावशाली थी कि वे क्या सोच रहे थे, क्योंकि वे इंग्लैंड के अत्याचार के अधीन थे। जैसा कि वे इंग्लैंड के अत्याचार और एक सम्राट के अत्याचार के अधीन हैं, और वे किस बारे में सोचना शुरू कर रहे हैं, और बोस्टन में इसके बारे में कम नहीं सोच रहे हैं, जो क्रांति के दिलों में से एक था, लेकिन वे इन विचारों के बारे में सोच रहे हैं, और वे उन्हें अमेरिकी नागरिक जीवन में लागू कर रहे हैं।

तो, यह पुस्तक वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण पुस्तक है। ठीक है, तो संस्थापक पिताओं के राजनीतिक और धार्मिक सिद्धांत के अंतर्गत, फिर वृत्तचित्र क्या है? इन लोगों के पास वृत्तचित्र की क्या अपील है? तो, एक बार जब मैं इसे आपके सामने पढ़ता हूँ, तो मुझे लगता है कि हम इसे समझ गए हैं, लेकिन ध्यान दें कि वृत्तचित्र की अपील बाइबल के लिए नहीं थी। संस्थापक पिता, जैसे-जैसे क्रांति गर्म हो रही है, वे बाइबल के लिए अपील नहीं कर रहे हैं।

वे नहीं हैं, और अपील बाइबल में किसी तरह के दिव्य रहस्योद्घाटन के लिए नहीं है, जिसने हमें हमारे कारण के लिए एक कारण दिया है। अपील किस लिए है? यह स्वयं-स्पष्ट के लिए है। तो चलिए शुरू करते हैं।

अब, यह आपको परिचित लगेगा। हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं। इसलिए, दार्शनिक रूप से अपील स्वयंसिद्ध सत्यों की है।

हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं। सभी मनुष्य समान बनाए गए हैं, और उन्हें किस चीज़ ने बख्शा है? उनके निर्माता ने। यह एक बहुत ही ईश्वरवादी शब्द है।

यह एक तरह का कोड वर्ड है। उन्हें उनके निर्माता द्वारा कुछ अविभाज्य अधिकार दिए गए हैं, और इनमें जीवन, स्वतंत्रता और खुशी की खोज शामिल है। इसलिए, यह अपील एक स्व-स्पष्ट, उचित अपील है।

हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं। इसलिए, उन्होंने यह नहीं कहा कि हम इन सत्यों को बाइबल से मानते हैं। हम बाइबल खोल रहे हैं, और हम बाइबल में ये सत्य पा रहे हैं, जो उन्होंने नहीं कहा, और वे उनके उद्धारक परमेश्वर द्वारा दिए गए हैं।

वे ईश्वर द्वारा दिए गए हैं, जो मसीह में शासन करने के लिए आए थे। इसलिए, यही संस्थापक पिताओं की अपील है। इसलिए, हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हम इसे समझें।

इनमें जीवन, स्वतंत्रता और खुशी की खोज शामिल है। अब यहाँ, इन अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए, सरकारें मनुष्यों के बीच स्थापित की जाती हैं, न कि ईश्वर द्वारा, जो शासितों की सहमति से अपनी न्यायपूर्ण शक्तियाँ प्राप्त करती हैं, कि जब भी सरकार का कोई भी रूप इन उद्देश्यों के लिए विनाशकारी हो जाता है, तो लोगों का अधिकार है कि वे इसे बदलें, इसे समाप्त करें और नई सरकार स्थापित करें, इसकी नींव और उप-सिद्धांतों को रखें और इसकी शक्तियों को ऐसे रूप में व्यवस्थित करें जो उन्हें अपनी सुरक्षा और खुशी को प्रभावित करने की सबसे अधिक संभावना लगे। इसलिए, यह बाइबिल में किसी पवित्र पाठ में ईश्वर के रहस्योद्घाटन की अपील नहीं है जिसके द्वारा हम यहाँ जो कुछ भी कर रहे हैं उसे आकार दे रहे हैं।

अब, मैं बस एक मिनट के लिए इस पर चर्चा करूँगा, और फिर मैं चाहता हूँ कि आप मुझे बताएँ कि मैं यहाँ कहाँ गलत हूँ। इसके साथ ही, संस्थापक पिताओं के साथ, अब अमेरिकी संवैधानिक जीवन धर्म से अलग हो रहा है। इसलिए, हम क्रांति में इस नई दुनिया का निर्माण करते हुए धर्म से अलग हो रहे हैं।

तो, एक तरफ चर्च है और दूसरी तरफ राज्य है, और इसलिए संविधान कार्यालय धारकों के लिए सभी धार्मिक परीक्षणों को अस्वीकार करता है। संविधान में कार्यालय धारकों के लिए कोई धार्मिक परीक्षण नहीं है। संविधान में लोगों की सहमति से कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक पद पर आसीन हो सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि वे धार्मिक व्यक्ति ही हों।

तो, जो होता है वह यह है कि चर्च और राज्य के इस विभाजन के तहत ईसाई धर्म फलता-फूलता है। तो, ईसाई धर्म, यह एक तरह का यहूदी-ईसाई उत्कर्ष है जो यहाँ चल रहा है, यहाँ तक कि क्रांति के समय भी। हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे।

अब, इस पर मेरा अंतिम शब्द यही है। अमेरिका को ईसाई देश या ईसाई राष्ट्र कहना संभव है। यह संभव है।

अमेरिका को ईसाई राष्ट्र कहना संभव है। लेकिन अमेरिका को ईसाई राष्ट्र कहना तभी संभव है जब आपका मतलब यह हो कि देश में बहुत सारे ईसाई हैं। अगर आपका मतलब यह है कि यहाँ

बहुत सारे ईसाई रहते हैं, और अगर आपका मतलब यह है कि अमेरिकी जीवन और संस्कृति में एक तरह का यहूदी-ईसाई जीवन विकसित हुआ है।

तो, अगर अमेरिका को ईसाई राष्ट्र कहने का आपका यही मतलब है, तो यह ठीक है। अगर आपका मतलब है कि संस्थापक पिता इसे एक ईसाई राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का इरादा रखते थे, तो हम ईसाई शब्द का इस्तेमाल इंजील शब्द के रूप में करेंगे, अगर आपका मतलब है कि वे इस देश को बाइबिल और पूरी बाइबिल के आधार पर एक इंजील ईसाई राष्ट्र के रूप में स्थापित करना चाहते थे, जिसमें अवतार और अन्य बातें शामिल होनी चाहिए।

अगर आपका मतलब यही है, तो मुझे नहीं लगता कि आप ऐसा कोई मामला बना सकते हैं। इसलिए, मैं जो बात खत्म करना चाहता हूँ, वह यह है कि अब मैं दो चीजों के बीच तुलना करना चाहता हूँ। इसलिए, अगर मैं सही हूँ, तो शायद मैं गलत भी हूँ।

तो शायद मैं गलत हूँ। इसलिए, आपको मुझे बताना होगा कि मैं कहाँ गलत हूँ। लेकिन अब इसकी तुलना करें, अगर मैं सही हूँ, तो इसकी तुलना दो चीजों से करें।

नंबर एक, इसकी तुलना प्यूरिटन द्वारा इस नए राष्ट्र की स्थापना के तरीके से करें। प्यूरिटन ने नए राष्ट्र की स्थापना अलग तरीके से की होगी, है न? क्योंकि प्यूरिटन ने स्थापना की थी, वे चाहते थे कि एक पहाड़ी पर बसा शहर एक तरह से ईश्वरीय प्रतिनिधित्व हो जो भगवान अपने लोगों के लिए चाहते थे। तो, इसकी तुलना प्यूरिटन से करें।

वे कभी भी इस तरह की भाषा का इस्तेमाल नहीं करते। वे कभी भी मनुष्य के कुछ खास तरह के अधिकारों के बारे में बात करते हुए एक नया राष्ट्र स्थापित नहीं करते। वे बाइबल के आधार पर एक नया राष्ट्र स्थापित करते।

लेकिन वे यहाँ धर्मतंत्र की स्थापना नहीं कर रहे थे, इसलिए प्यूरिटन का इरादा एक नया राष्ट्र स्थापित करने का नहीं था। साथ ही, नंबर दो इसकी तुलना रोजर विलियम्स की समझ से करता है कि वह प्रोविडेंस और रोड आइलैंड में क्या कर रहे थे। क्योंकि उनका मानना है कि वह वहाँ जो कर रहे हैं, वह बाइबल पर आधारित है।

अब, इसमें धार्मिक स्वतंत्रता का पूरा सिद्धांत था, न कि केवल धार्मिक सहिष्णुता बल्कि धार्मिक स्वतंत्रता। लेकिन रोजर विलियम्स, जो कर रहे थे, जिस दुनिया की स्थापना वे रोड आइलैंड में कर रहे थे, वह, जहाँ तक उनका संबंध था, एक बहुत ही ईश्वरीय दुनिया थी। और यह शास्त्रों पर आधारित थी।

यह सिर्फ स्व-प्रमाणित सत्यों पर आधारित नहीं था। यह बाइबल पर आधारित था। लेकिन ये लोग अलग हैं।

इन लोगों का धर्मग्रंथों या ईश्वर के बारे में वही दृष्टिकोण नहीं है जो प्यूरिटन्स या रोजर विलियम्स का था। वे मूल रूप से ईश्वरवादी हैं जो ईश्वर को ईश्वर के निर्माता के रूप में देखते हैं। और हम यहाँ पृथ्वी पर एक नैतिक, तर्कसंगत जीवन जी रहे हैं।

और वह सृष्टिकर्ता ईश्वर हमसे सरकार की स्थापना में कुछ अच्छे काम करने की अपेक्षा रखता है। और निश्चित रूप से अंग्रेजी अत्याचार को खत्म करना। तो यहाँ भी यही मामला है।

तो अब मुझे बताइए कि मैं यहाँ कहाँ गलत हूँ। मैं कहाँ गलत हूँ? संस्थापक पिता मूल रूप से चर्च की सदस्यता के मामले में एंग्लिकन थे। जॉर्ज वाशिंगटन जैसे व्यक्ति के साथ समस्या यह थी कि वह बहुत, बहुत, बहुत कम ही चर्च जाता था।

हमारे पास जॉर्ज वाशिंगटन के चर्च जाने के बहुत कम रिकॉर्ड हैं। इसलिए, ये लोग मूल रूप से एंग्लिकन हैं। वे अपनी पृष्ठभूमि के संदर्भ में एंग्लिकन हैं।

लेकिन अमेरिका में पहला एंग्लिकन चर्च, मेरा मतलब है अमेरिका में पहला यूनिटेरियन चर्च, हम इसके ठीक बगल से गुजरने जा रहे हैं, अगर आपने फ्रीडम ट्रेल किया है, तो आप इसके बगल से गुजरे होंगे, किंग्स चैपल है। 1785 में, यह यूनिटेरियन बन गया। इसलिए, एंग्लिकन चर्च, उस समय भी, यूनिटेरियनवाद, देववाद की ओर बढ़ रहे थे, जो अंततः यूनिटेरियनवाद बन गया।

तो, वे एंग्लिकन हैं, लेकिन यह बहुत कुछ नहीं कह रहा है। तथ्य यह है कि उनके पास यह चर्च परंपरा और पारंपरिक चर्च पृष्ठभूमि थी, फिर भी उनके वास्तविक, गहरे धार्मिक जीवन के बारे में बहुत कुछ नहीं कहा जा सकता। तो हाँ, तो वे मूल रूप से सभी नहीं थे।

याद रखें, रोड आइलैंड में स्वतंत्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर करने वाला क्लेकर था। कुछ और। ठीक है, हाँ, मैट, यहाँ हमारी मदद करो।

मैं निश्चित रूप से सहमत हूँ कि एक शिक्षित, तकनीकी रूप से साक्षर कैथोलिक के रूप में, क्या आप कहेंगे कि उदाहरण के लिए, आम लोगों को स्वर्ग से निपटने की ज़रूरत है? ठीक है, हाँ। मैं कहूँगा कि नेतृत्व के अलावा आम लोग इस समय अधिक रूढ़िवादी धार्मिक हैं। हालाँकि, यह दुर्भाग्यपूर्ण है, इसके बावजूद, हम इसे बहुत बाद में देखेंगे।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसके बावजूद, जैसे-जैसे आप क्रांति के समय के करीब आते हैं, चर्च में उपस्थिति तेजी से कम होने लगती है। और यहाँ हमारे पास अभी-अभी यह पहली महान जागृति थी, अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में एक जबरदस्त जागृति, और फिर भी क्रांति के समय तक यह गिरावट आ रही है। इसलिए, मैं कहूँगा कि आम लोग, आम लोग, चर्च जा रहे हैं।

वे ईसाई हैं और इसी तरह के अन्य लोग भी हैं। लेकिन विचारक, जिन्होंने इस पर गहराई से सोचा, और आम लोग इस तरह से जुड़ने में खुश हैं क्योंकि वे धार्मिक युद्धों के बारे में काफी जानते हैं। वे इस बारे में काफी जानते हैं कि जब कोई राज्य चर्च को नियंत्रित करता है, और वे उस स्थिति में वापस नहीं जाना चाहते।

इसलिए, वे वैसे भी चर्च और राज्य के लोगों से अलग हैं, आम तौर पर कहा जाए तो। इसलिए, वे इसे स्वीकार करेंगे। संस्थापक पिताओं के बारे में कुछ और बातें।

यह देववाद की ओर बढ़ रहा है। यदि आप जेफरसन को बाइबल को फिर से लिखने और चमत्कारों को हटाने के लिए प्रेरित करते हैं, तो आप रूढ़िवादी ईसाई धर्म से दूर एक बहुत ही पूर्ण विकसित देववादी तरह की सोच की ओर एक मजबूत कदम बढ़ा रहे हैं। क्या आप जेफरसन को इसलिए चुनते हैं क्योंकि उन्होंने ऐसा किया था? हाँ, मैंने जेफरसन को इसलिए चुना क्योंकि वह एक शानदार लेखक भी हैं, और पूर्व ने अपनी भाषा में इस सोच को कुछ हद तक आकार दिया, जो शानदार भाषा है।

तो हाँ, मैंने उन्हें इसलिए चुना क्योंकि शायद वे ही ऐसे व्यक्ति होंगे जिनसे हम सबसे ज़्यादा परिचित होंगे। लेकिन उदाहरण के लिए, बेंजामिन फ्रैंकलिन के पास जाने के बारे में क्या? क्या आपको बेंजामिन फ्रैंकलिन में एक बहुत ही धार्मिक, रूढ़िवादी, ज़मीनी व्यक्ति मिल रहा है जो अवतार में विश्वास करता है? नहीं, आपको बेंजामिन फ्रैंकलिन में ऐसा नहीं मिल रहा है।

आप मूल रूप से एक ऐसे नास्तिक को खोज रहे हैं जो एक अच्छा नैतिक जीवन जीना चाहता था और जिसने हमें सोचने के लिए बहुत सी अच्छी चीजें दीं, जैसे कि जल्दी उठने वाला व्यक्ति ही कीड़ा पकड़ता है। लेकिन आप ऐसे व्यक्ति के बारे में बात नहीं कर रहे हैं जो शास्त्रों, चर्च या चर्च के जीवन में निहित है। क्या आपके पास एक और सवाल है? हाँ, ज़रूर।

उस समय जब जेफरसन राष्ट्रपति बने थे। जब जेफरसन राष्ट्रपति बने थे, है न ? और इसलिए, मैं सोच रहा हूँ, जैसे, एडम्स प्रशासन, संघवादियों, जेफरसन और उन लोगों के बीच जो जेफरसन को राजनीतिक विचारधारा में इस्तेमाल करना चाहते थे, क्या कोई ध्यान देने योग्य धार्मिक अंतर था? मैं कहूँगा नहीं, लेकिन मैं उन लोगों की बात सुनने के लिए तैयार हूँ जो सुनना चाहते हैं, क्योंकि मैं कहूँगा कि देववाद मूल रूप से नेतृत्व की सोच थी।

और भले ही नेतृत्व बदल गया हो और कुछ विचार बदल गए हों, मुझे लगता है कि हम अभी भी मूल रूप से देवादियों के बारे में बात कर रहे हैं। तो यही वह मामला है जिसे मैं बनाना चाहता हूँ। लेकिन क्या आप में से किसी ने कभी द लाइट एंड द ग्लोरी नामक पुस्तक के बारे में सुना है? किसने इस पुस्तक के बारे में सुना है? द लाइट एंड द ग्लोरी के लिए हाथ, इसके बारे में सुनकर।

नहीं? ठीक है, तो टेड और मैंने इस किताब के बारे में सुना है। तो, द लाइट एंड द ग्लोरी के बारे में सुनकर कोई हाथ नहीं है। द लाइट एंड द ग्लोरी एक बहुत ही दिलचस्प किताब है, और मैंने लेखक को बोलते हुए सुना है।

और वह मेरे जैसे लोगों द्वारा इस तरह की बातें सिखाने से थोड़ा परेशान है। और इसलिए द लाइट एंड द ग्लोरी में, वह प्रस्ताव देने की कोशिश करता है, और आपको द लाइट एंड द ग्लोरी पढ़नी चाहिए। इससे आपको कहानी का दूसरा पहलू पता चलेगा।

लेकिन वह एक बात कहने की कोशिश करता है; वह यह प्रस्तावित करने की कोशिश करता है कि शुरुआती संस्थापक पिता पूरी तरह से इंजीलवादी थे और उनके बारे में देववादी के रूप में बात करना अच्छी बात नहीं है। खैर, हाँ ...

जॉन विदरस्पून पादरी वर्ग के सदस्य थे। ठीक है। तो, उनकी इसमें रुचि थी।

विदरस्पून की बात चार्ल्स चाउंसी जैसी है जो कुछ समय पहले तक चर्च में थे। चार्ल्स चाउंसी पादरी वर्ग के सदस्य थे लेकिन जैसा कि हमने बताया, वे प्रथम महान जागृति के आलोचक थे और अंततः वे यूनिटेरियनवाद में विकसित हो गए। इसलिए, इनमें से कुछ लोग धार्मिक रूप से भी रूढ़िवाद से दूर जा रहे हैं।

लेकिन हाँ, हम ऐसे लोगों को पा सकते हैं जिन्हें हम इस समय के दौरान इंजीलवादी मान सकते हैं। मैं बस यह तर्क देने की कोशिश कर रहा हूँ कि मूवर्स एंड द शेकर्स, कोई व्यंग्य नहीं, हमने अभी तक शेकर्स के बारे में बात नहीं की है, लेकिन मूवर्स एंड द शेकर्स वे लोग थे जो ईश्वरवादी थे और रूसो की भाषा का इस्तेमाल करते थे। वे बाइबल की भाषा का इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं।

वे स्वतंत्रता की घोषणा और संविधान की स्थापना करते समय सामाजिक अनुबंध की भाषा का उपयोग कर रहे हैं। हाँ, मुझे लगता है कि जो हो रहा है वह यह है कि यूरोप में ईश्वरवाद एक सम्मोहक बौद्धिक शक्ति है, और यह इन लोगों के माध्यम से अमेरिका में आता है जो अच्छी तरह से शिक्षित और पढ़े-लिखे हैं। याद कीजिए जेफरसन ने फ्रांस में कितना समय बिताया था? ये लोग हमारी संस्कृति में एक तरह से बहुत परिष्कृत, बौद्धिक शक्ति हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि यहाँ भी ईश्वरवाद की वास्तविक अपील थी। दर्शकों की ओर से प्रश्न। नहीं, ठीक है।

यह एक अच्छा सवाल है। मुझे दो बातें समझ में आती हैं। पहली बात, निश्चित रूप से तीर्थयात्री, प्यूरिटन, कांग्रेसनलिस्ट रोजर विलियम्स, उन्होंने इस भाषा का इस्तेमाल नहीं किया होगा।

अगर उन्होंने वास्तव में कोई देश बसाया होता तो वे और भी ज़्यादा बाइबिल की भाषा का इस्तेमाल करते, जो कि उन्होंने नहीं किया। लेकिन अगर उन्होंने ऐसा किया होता, तो वे धर्मतंत्र की भाषा का इस्तेमाल भी नहीं करते क्योंकि मुझे लगता है कि वे मूल रूप से सोचते थे कि यह सिर्फ़ इज़राइल से संबंधित है। लेकिन वे भगवान द्वारा पहाड़ी पर बसाए गए इस शहर जैसी भाषा का इस्तेमाल करते।

इसलिए, वे इस बात से सहमत नहीं थे। निश्चित रूप से, क्रांति के दौरान ऐसे लोग थे जो इस बात को याद करते थे और इसे ईसाई राष्ट्र के रूप में देखते थे। लेकिन मुझे नहीं लगता कि नेतृत्व ऐसा था।

मुझे लगता है कि नेतृत्व हमें इसके लिए एक नया दृष्टिकोण दे रहा था। और इस दृष्टिकोण का एक हिस्सा, निश्चित रूप से, चर्च और राज्य का पृथक्करण था। यह इस दृष्टिकोण का भी हिस्सा था कि हम यहाँ एक बिल्कुल नया देश, एक बिल्कुल नई दुनिया विकसित कर रहे हैं।

लेकिन अब, इतिहास 19वीं सदी और 20वीं सदी में आगे बढ़ता है, और हमारे पास निश्चित रूप से ऐसे लोग हैं जो संस्थापक पिताओं को एक ईसाई राष्ट्र की स्थापना करने की कोशिश करते हुए देखते हैं। मुझे लगता है कि वे यहूदी-ईसाई नैतिक सिद्धांतों और वहाँ एक नींव के आधार पर एक

राष्ट्र की स्थापना कर रहे थे। लेकिन मुझे नहीं लगता कि उनकी भाषा, उनकी भाषा मुझे यह बताती है कि वे क्या थे।

आपने कहा कि चर्च और राज्य का पृथक्करण रोजर वर्ली का था। ठीक है। क्या आपने कहा कि संस्थापक पिता थे? मुझे लगता है कि संस्थापक पिता अभी भी ब्रिटिश थे।

और हम अंग्रेजों को बाहर निकाल रहे हैं। अंग्रेजों ने ब्रिटिश दुनिया को अभी भी ऐसी दुनिया के रूप में देखा है जहाँ राज्य चर्च को नियंत्रित करता है। और वे ऐसा नहीं चाहते हैं।

और वे अमेरिका में ईसाई धर्म के विकास और यहां तक कि अन्य धर्मों के विकास को अनुमति देने में प्रसन्न हैं। अमेरिका में पहला आराधनालय स्थापित किया गया था। आधुनिक यहूदी संस्कृति कौन है, लोगों? हमारे पास पाँच सेकंड हैं। आधुनिक यहूदी संस्कृति, कोई भी? अमेरिका में पहला यहूदी आराधनालय कहाँ स्थापित किया गया था? रोड आइलैंड में।

धार्मिक स्वतंत्रता के कारण यह आश्चर्यजनक नहीं है। इसलिए, वे धर्म को पनपने देने में प्रसन्न हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है।

हम इसे बुधवार को उठाएंगे। आप मुझे बुधवार को बता सकते हैं कि मैं वास्तव में कितना विधर्मी हूँ, और फिर हम वहाँ से आगे बढ़ेंगे।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 7 है, धर्म और अमेरिकी क्रांति।